बी.ए. द्वितीय वर्ष
प्रथम प्रश्न-पत्र

— डॉ० कृपा शंकर यादव

अरस्तू का सम्पत्ति सम्बंधी विचार

→ सम्पत्ति उन साधनों के समूह का नाम है जिनका उपभोग परिवार या राज्य में होता है।
— सम्पत्ति एक प्राकृतिक वस्तु है जिसका जन्म से मरण तक मनुष्य को आवश्यकता होती है तथा जिसके माध्यम से वह अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सम्पत्ति एक साधन है।

→ सम्पत्ति के प्रकार
- सजीव सम्पत्ति :— दास-दासी आते हैं।
- निर्जीव सम्पत्ति :— पूंजी, मकान, खेत आदि वस्तुएं।

→ सम्पत्ति अर्जन के उपाय
- प्राकृतिक उपाय :— कृषि, पशु-पालन द्वारा
- अप्राकृतिक उपाय :— व्यापार से धन कमाना, सूदखोरी के माध्यम से ब्याज कमाना आदि। यह उपाय शोषण पर आधारित हैं।

→ सम्पत्ति में बुराई नहीं है वरन मानव स्वभाव में बुराई निहित है। अतः मानव स्वभाव को उसके उचित उपयोग के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

→ सम्पत्ति का स्वामित्व :—
- (I) सार्वजनिक स्वामित्व और सार्वजनिक उपभोग — स्वीकार करने योग्य नहीं है।
- (II) सार्वजनिक स्वामित्व और व्यक्तिगत उपभोग — औचित्य नहीं।
- (III) व्यक्तिगत स्वामित्व और सार्वजनिक उपभोग — उपयोगी और व्यावहारिक है।

→ सम्पत्ति का समानीकरण — सम्पत्ति की समानता इतनी होनी चाहिए जिससे व्यक्ति का जीवन निर्वाह तथा चारित्रिक उत्थान (नैतिक + बौद्धिक विकास) सम्भव हो सके।
— सम्पत्ति के मध्यम मार्ग का अनुसरण हो तथा आवश्यकता से कम या अधिक सम्पत्ति दोनों स्थितियां उचित नहीं हैं।

→ राज्य की सम्पत्ति न तो अति अधिक हो एवं न अतिकम हो। आत्मनिर्भर सम्पत्ति हो।

→ राज्य में सम्पत्ति की समानता बनाये रखने के लिए जनसंख्या नियंत्रण में रहे। जनसंख्या की वृद्धि निर्धनता की जड़ है। अतः जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए राज्य द्वारा कानून के माध्यम से कदम उठाना चाहिए।